Vol III Issue VIII Feb 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-8 | Feb-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

मैत्रेयीपुष्पा के जीवन में 'प्रेम की अपरिहार्यता' आत्मकथा के विशेष सन्दर्भ में

Kiran Grover

Deptt. of Hindi , Associate Professor , D A V College, Abohar (Punjab)

***सारांश* :-**साहित्य की विधाओं में आत्मकथा आन्तरिक मनोभावों का प्रतिनिधित्व करने, भुक्त यथार्थों का सम्प्रेषण करने ,मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण जीवन की सक्षम विधा प्रतीत होती है।आत्मकथा स्वानुभूत की स्वानुभूत के रूप में अभिव्यक्ति है।आत्मकथाकारों के जीवन का विशेष अध्ययन कथानायक के जीवन की सफलता का दिग्दर्शन करवाता है। आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है।आत्मनिरीक्षकों ने तनाव से मुक्ति के सन्दर्भ में प्रेम की अपरिहार्यता पर प्रकाश डाला है। विवाह से पूर्व साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में प्रेमी–प्रेमिका रूपी भावना के सागर में उद्वेलित होकर यौनाकर्षण में किस सीमा तक 'स्व' को प्रतिबद्ध किया है।आत्मकथा के सन्दर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान अविस्मरणीय है जिन्होंने यथार्थधर्मिता के धरातल पर अनुद्घाटित आयामों को खोला है।मैत्रेयी पुष्पा जी ने "कस्तूरी कुंडल बसै'' नामक आत्मकथा के अन्तर्गत बचपन के लगाव, अलगाव, लाड, गुस्सा, ममता, निर्मोह आदि भावों की भंगिमा को नियोजित किया है। मैत्रेयी जी ने डॉ॰ सिद्धार्थ के साथ सम्बन्धों के टूटने व जुड़ने की सच्चाइयाँ प्रकट कर स्वयं की चुप्पी व घर के अशान्त वातावरण को शब्दबद्ध किया है।मैत्रेयी जी नेगुड़िया भीतर गुड़िया'आत्मकथा के दूसरे अंश में प्रेम के अनवरत इतिहास में ईमानदारी को पतवार बनाकर असंमजस की स्थिति में किनारे की ओर बढ़ने का साहसिक परिचय दिया है।पाठकों की जिज्ञासा का शमन करने हेतु मैत्रेयी जी ने राजेन्द्र यादव जी के साथ अपने सम्बन्धों की निश्छलता को शब्दबद्ध किया है। 17 वर्षों के साहित्यिक जीवन में मैत्रेयी जी ने विवेकपूर्ण चिन्तन करके साहित्यिक मित्रों का आश्रय पाकर साहित्य में प्राणतत्व को फूँकने का प्रयास किया।आत्मकथा के सन्दर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान प्रशंसनीय है जिन्होंने जीवन में प्रेम की अपरिहार्यता को प्रकट करके अपनी विचारधारा को पाठकों के समक्ष सम्प्रेषित किया है।

KEYWORDS (बीज शब्द): आत्मकथा , मैत्रेयी पुष्पा , प्रेम की अपरिहार्यता' ,दाम्पत्य सम्बन्ध।

प्रस्तावना :

जीवन और साहित्य का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। वैयक्तिक जीवन में साहित्य के गूढ़ तत्त्व निहित रहते हैं। सामान्यतः साहित्य को जीवन की आलोचना कहा जाता है, जबकि आत्मकथा भोगे हुए क्षणों का आदिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक सुख–दुःखों का सच्चा लेखा–जोखा होता है। कल्पनाप्रवण साहित्य स्वानुभूत की परानुभूत के रूप में अभिव्यक्ति है और आत्मकथा स्वानुभूत की स्वानुभूत के रूप में अभिव्यक्ति है। साहित्य की विधाओं में आत्मकथा जीवन की निकटस्थ विधा है। आत्मकथा किसी व्यक्ति का स्वयं अपने विषय में लिखा गया जीवन का सत्यापित इतिहास है। विस्काउण्ट स्नोडन ने लिखा है– हर व्यक्ति के पास कहने के लिए अपनी जीवन गाथा है और कोई भी आत्मचरित्र कभी भी यथार्थ में बुरी पुस्तक नहीं होती।[1] शिप्ले ने आत्मकथा को अपने विशाल जीवनानुभव कोश को बाह्य जगत की पृष्ठभूमि की सहायता से व्यवस्थित रूप से रखने पर बल दिया है। उन्होंने अन्तर्दृष्टि के साथ संस्मरणात्मक रूप से आत्मकथा लिखने की बात भी कही है।[2]

मानसिक प्रौढ़ावस्था में जब प्रख्यात व्यक्ति अपने अतीत पर दृष्टिपात करते हुए घटनाओं, पात्रों, स्थितियों, परिस्थितियों आदि का निष्पक्ष होकर शृंखलाबद्ध वर्णन करता है, जो उसके व्यक्तित्व निर्माण में साधक या बाधक रही हों, तो वह कृति आत्मकथा कहलाती है। आन्तरिक मनोभावों का प्रतिनिधित्व करने, भुक्त यथार्थों का सम्प्रेषण करने ,मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण आत्मकथा सर्वाधिक सक्षम विधा प्रतीत होती है।[3]

आत्मकथा लेखक की स्थिति विशिष्ट अन्तर्द्वन्द्वसे सम्पूरित होती है। रागात्मकता वृत्ति की अधिकता के कारण भावनाओं का सहज

उच्छलन आत्मकथा के प्रणयन का कारण हो सकता है। भावुक व्यक्ति जब अपने अन्तर्मन पर चढ़ते भावनाओं के दबाव से विवश हो जाता है, तब आत्मकथा के रूप में उन भावनाओं को अभिव्यक्त करता है।[3] जब विगत जीवन के अनुभव और अनुभूतियाँ साहित्य स्रष्टा को इतना उद्वेलित व विवश कर देती हैं कि उन्हें अपने अन्तर्मन के बाहर उड़ेल देने के अतिरिक्त और कोई विकल्प शेष नहीं रह जाता, प्रायः तभी श्रेष्ठ आत्मकथाएँ जन्म लेती हैं।[4]

साहित्यकारों के जीवन रहस्य को जानने का मानव–मन में सहज कौतूहल होता है। आत्मकथाएँ इस कौतूहल के उपशासन में सहायक होती है। आत्मकथा की सफलता के पीछे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त कार्यान्वयन करता है।आत्मकथा एक अन्तर्मुखी विधा है, अपने मन के द्वन्द्वों, अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं के सम्प्रेषण के लिए स्रष्टा आत्मकथा का सृजन करता है। आत्मकथा अधिकाधिक मानवीय गुणों से संवलित होने के कारण साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें आत्म प्रकाशन, आत्मसम्प्रेशण, आत्मविवेचन, आत्मनिरीक्षण, आत्मविकास करने के लिए आत्मकथाकार को उपयुक्त श्रम संधान करना पड़ता है। आत्मकथा किसी व्यक्ति विशेष द्वारा विगत जीवन के अनुभव को वर्तमान के स्तर पर निष्पक्षरूपेण प्रस्तुत करने का प्रयास है जिसमें कलात्मक रीति से व्यष्टि का विशिष्ट बोध समष्टि के सहज बोध में परिणित होता है।[5]

आत्मकथाकार बहिर्मुख होने की अपेक्षा अर्न्तमुख होकर ही आत्मकथा लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। इस प्रक्रिया में वह अपने स्वजनों, परिजनों एवं इष्ट मित्रों तक से अलग होता हुआ आत्मकथा लिखता है जिसमें अपनी कथा कहने के साथ साथ अपनों की कथा कहने का अधिकार सहज ही प्राप्त कर लेता है। आत्मकथाकारों के जीवन का विशेष अध्ययन कथानायक के जीवन की सफलता का दिग्दर्शन करवाता है तथा वहीं पाठकीय जिज्ञासा का भी शमन करता है। साहित्य के अघ्येता को साहित्यकारों का सम्पूर्ण परिचय जानने की विशेष उत्सुकता रहती है कि साहित्यकार ने किन परिस्थितियों में साहित्य का निर्माण किया। साहित्यकारों की आत्मकथाएँ तथ्याश्रिता के आधार पर अपना पृथक् रूपभेद निर्मित करती हुई प्रमाता के अन्तःकरण पर विशेष छाप छोड़ती हैं।[6]साहित्यकारों की आत्मकथाओं में सौन्दर्य, आशा–निराशा, पीड़ा–चाह, भय ग्रन्थि, सुख–दुःख के विविध छाया तथ्यों की ही बाह्य सौन्दर्यमयी कलात्मक अभिव्यक्ति की गई है। कवि की कविता, कथाकार की कथा, आलोचक की आलोचना, संगीतज्ञ का संगीत, मूर्तिकार की मूर्ति, चित्रकार के चित्र, अभिनेता के अभिनय से सर्वथा भिन्न आत्मकथाएँ हैं, जिनका नायक प्रामाणिक जीवित व्यक्ति होता है, जिसकी वर्जनाएँ, कुण्ठाएँ और विवशताएँ निजतः भोगी हुई होती हैं। आत्मकथा साहित्य का वह प्रकार है, जिसमें लेखक अपने जिये हुए जीवन का, मुख्य घटनाओं का विवरण सत्य एवं यथार्थ की भूमिका पर आत्मनिरीक्षण एवं परीक्षण करते हुए प्रस्तुत करता है।[7]

विश्वसनीयता व यथार्थ–बोध साहित्यकारों की आत्मकथा की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं।साहित्यकारों की आत्मकथाओं में निरूपित दाम्पत्य सम्बन्धों का विशेष अध्ययन जहाँ उनके परिचय को समग्रता और सार्थकता प्रदान करता है और पाठकीय जिज्ञासा हेतु पूर्ण सन्तुष्टि प्रद है वहाँ साहित्य के इतिहास के अध्ययन में भी नवीन दिशाओं की गवेशणा करने वाला है। दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है।[8] आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है। साहित्य के अघ्येता को साहित्यकारों का सम्पूर्ण परिचय जानने की विशेष उत्सुकता रहती है कि साहित्यकार ने किन परिस्थितियों में साहित्य का निर्माण किया है। यौन तृप्ति से प्राप्त आनन्दानुभूतियों को अभिव्यंजित करने में साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में अद्भुत साहस का परिचय दिया है। लेखकों ने जीवन की उन समस्याओं को रेखांकित किया है जो गहन यथार्थ बोध के साथ संवेदनात्मक धरातल को संस्पर्षित करती है। आत्मविश्लेषकों ने असामाजिक प्रेम सम्बन्धों को संवदेनशीलता व तटस्थता के साथ विस्तारित किया। जीवन की यथार्थधर्मिता में घटनाओं का संयोजन करके आत्मकथाकारों ने साम्य–वैशम्य रूप में सानुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों का आकलन किया है। आत्मकथाओं में तथ्याश्रिता के आधार पर यह स्वीकार किया गया है कि उनके जीवन में महिलाओं व पुरुषों का कितना योगदान है। आत्मनिरीक्षकों ने तनाव से मुक्ति के सन्दर्भ में प्रेम की अपरिहार्यता पर प्रकाश डाला है। दाम्पत्य सम्बन्धों में असन्तुष्टि को साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में कितना बेबाकी से स्वीकार किया है। आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है। विवाह से पूर्व साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में प्रेमी–प्रेमिका रूपी भावना के सागर में उद्वेलित होकर यौनाकर्षण में किस सीमा तक 'स्व' को प्रतिबद्ध किया है। आधुनिकता के समावेश ने साहित्यकारों की आत्मकथाओं में जीवनमूल्यों को किस हद तक प्रभावित किया है।

आत्मकथा के सन्दर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान अविस्मरणीय है जिन्होंने यथार्थधर्मिता के धरातल पर अनुद्घाटित आयामों को खोलकर अपनी विचारधारा को पाठकों के समक्ष सम्प्रेषित किया है।

मैत्रेयी पुष्पा जी ने "कस्तूरी कुंडल बसै'' नामक आत्मकथा के अन्तर्गत बचपन के लगाव, अलगाव, लाड, गुस्सा, ममता, निर्मोह आदि भावों की भंगिमा को घटनाक्रम रूप में नियोजित किया है। अपने जीवन के तिक्त–मधुर अनुभवों, मुक्ति की आकांक्षा, बाहर भीतर खंगालने की प्रक्रिया को शब्दबद्ध किया है। बचपन से वय अवस्था को प्राप्त करती लेखिका ने विभिन्न परिपार्श्वों के माध्यम से युवकों के व्यवहार, सहपाठियों के साथ प्रेम–व्यापार, आकर्षण, काम भावना को सहज रूप में प्रतिपादित किया है। मैत्रेयी जी ने स्कूल जीवन के विभिन्न प्रसंगों में जगदीश, एदल्ला आदि के प्रति व्यवहारोन्मुखता का परिचय इस प्रकार दिया है – "वह बैठी थी। लड़का बैठा था। मैत्रेयी की आँखें एदल्ला की गैल से लगी थी। अचानक वह चौंकी लड़के का हाथ उनकी फ्राक को पार करता हुआ जांघों तक आ गया है– जद्दोजहद ऐसी हुई कि कच्छी बचाते–बचाते फ्राक फट गई।" "एदल्ला की तो सूरत ही बिगड़ गई थी– संग रोते–राते आए थे, अपने घरों में अलग–अलग रोये।'[9]

अपने जीवन में घटित घटनाओं को मैत्रेयी जी ने प्रसंगवश बेबाकी के साथ उद्घाटित किया है। संयोजिका के घर का वातावरण, घर के ब्यौरे में संकट, घनघोर विपत्ति, विवाहित युवकों का मैत्रेयी के प्रति आकर्षणीय व्यवहार निम्न वक्तव्य प्रकट करने में विवश कर देता है – "माँ, यहाँ एक आदमी है। इस घर का सबसे छोटा बेटा, जिसका ब्याह हो गया है– माता जी, वह मुझे रात–भर सोने नहीं देता– गांव भाग जाउंगी– शहर के लोग कैसे है, रात में पेट पर हाथ धरते हैं। छाती नोंचते, काटते हैं और कच्छी..... ।"[10]

जीवन में युवकों के अतिरिक्त बूढ़ों के व्यवहार के प्रति भी मैत्रेयी जी में उदासीनता का ही परिचय प्राप्त होता है–"बूढ़ा उन दोनों की गैर–हाज़िरी में आया– हरकत आगे चली, मैत्रेयी चिल्ला उठी। बूढ़े का कान खा डाला– किस तरह छूटी, कुछ याद नहीं–बस मुँह खोलकर हांफ रही है।..... जवानों से ज्यादा दोष बूढ़ों में होते हैं क्योंकि वे बूढ़े हैं..... वह असहाय की तरह फूट–फूट कर रो पड़ी।"[11]

युवावस्था में मैत्रेयी जी ने कॉलेज में प्रविष्टि ली। खिल्ली से मोंठ और मोंठ में कॉलेज, कॉलेज में कॉमनरूम, प्रिंसीपल के द्वारा

एकस्ट्रा क्लास के लिए बुलाना, प्रिंसीपल का लड़की के प्रति निर्दयी व्यवहार, चश्मदीद गवाह चपड़ासी, लड़कों का उफ़ान, साथी ही हमराज़, पुलिस सुरक्षा आमरण अनशन,रस्टीकेशन आदि मामलों में मैत्रेयी जी ने हतप्रभता का परिचय दिया है–"भारी भरकम शरीर, चौड़ा चकला चेहरा, मझोला कद और सीधे कढ़े काले बाल– बांहों के घेरे में कस रहे हैं लड़की को। चुम्बन और मनुहार..... सिटपिटा गई लड़की।"[12]

गांव के युवक शिवदयाल के साथ प्रेम सम्बन्धों को मैत्रेयी जी ने सहज रूप में प्रकट किया है–"कुछ दिन सुना कि शिव दयाल ने आर्मी ज्वाइन कर ली है..... चिट्ठी भी आई थी जिसमें सम्बोधन था..... परम्परा ढोने वाली आधुनिक प्रियतमा..... लिखने वाले की जगह नीचे लिखा था..... प्रेम न सही, युद्ध में शहीद हो जाने का इच्छुक शिवदयाल..... उस दिन कितना रोई थी मैत्रेयी।"[13]

दाम्पत्य सम्बन्ध स्थापन से पूर्व अपनी यौन कुण्ठाओं को 'स्व' के रूप में मैत्रेयी जी ने प्रक्षेपित किया है। खिल्ली में महिला मंगल के वार्षिक शिविर के समापन समारोह के अन्तर्गत मैत्रेयी जी ने नन्दकिशोर के साथ अपनी दमित वासनाओं, मदहोशी, आलिंगन, संस्पर्श, चुम्बन आदि मनोवृत्तियों को स्पष्ट शब्दों में अभिव्यंजित किया है–"रात का समय और एकान्त कमरे में मैं और नन्दकिशोर दरिया दो बिछी थी..... मगर रजाई एक ही थी..... हम एक ही खटिया पर एक रजाई में.....अपनी–अपनी जगह बीच में प्यार था..... उष्मा बांहों में थी बन्धन एकदम टूटे..... युद्ध छिड़ने को है..... चुम्बन ले लिया।"[14]

वास्तव प्रेम काम–वासना का ही परिष्कृत रूप स्वीकार गया है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने शारीरिक भूख, तनाव से मुक्ति आदि के सन्दर्भ में प्रेम की अपरिहार्यता पर प्रकाश डाला है। दाम्पत्य पूर्व सम्बन्धों की भाव–भूमि का विश्लेशण करते हुए मैत्रेयी जी ने दमित वासनाओं, आकाक्षाओं का अतिरंजना शैली में प्रतिपादन किया है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने जीवन के मधुर व तिक्त अनुभवों को विविध भंगिमाओं के साथ चित्रमयी शैली में अभिव्यंजित किया है। जीवन की सच्चाई से पाठकों को रूबरू करवाकर अन्तरंगता का परिचय दिया हैं। भौतिकतावाद के दौर में मैत्रेयी जी ने पति–पत्नी के सम्बन्धों में अविश्वास, असन्तोष व विपरीतधर्मिता को उल्लिखित किया है। मैत्रेयी जी अपनी आत्मकथा में भुक्त यथार्थ की अभिव्यंजना, भावनाओं का सहज उच्छ्लन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वका शमन, आत्मरहस्योद्घाटन आदि प्रयोजनों के निहित्तार्थ को सुस्पष्ट किया है। मैत्रेयी जी ने अपने अनुभव से सिद्ध किया है कि पति अपनी पत्नी की कोमल भावनाओं को कुचल रहा हो तो पत्नी को पतिव्रत के नियमों का उल्लंघन करना पड़ता है। डॉ. सिद्धार्थ के ह्रदय की कसावट को अनुभूत करके अपने अप्रत्याशित चलन के सम्बन्ध में दाम्पत्येतर सम्बन्धों को मैत्रेयी जी ने स्वीकृति प्रदत्त की है–''ऐसे दर्दनाक लम्हों को याद करके डॉ. सिद्धार्थ के कन्धे पर मेरा सिर टिक गया था....तुम कहते हो, मैं उनके सीने से लग गई थी तो लोग सकते में आ गये थे बस यहीं से मुझे ताकत मिलती है..... वह मेरे अप्रत्याशित चलन के कारण हुआ।''[15]

अपने पति को अन्तर्मुखी सम्बोधित कर मैत्रेयी जी ने अपने मन की भावनाओं के उद्वेलन को डॉ॰ सिद्धार्थ पर आरोपित किया। डॉ॰ सिद्धार्थ के प्रेम पूर्ण व्यवहार को मैत्रेयी जी ने मादक अनुभव के रूप में सन्दर्भित किया है–''तुम नहीं सुन पाओगे कि डॉ सिद्धार्थ ने मेरे भावनात्मक खालीपन में प्रवेश किया। मेरे अधसोये वजूद को संकेत मिला कि यह प्यारी सी पहल और दिलकश पहचान सब पुरुषों के पास नहीं होती।''[16]

मैत्रेयी जी ने डॉ॰ सिद्धार्थ के साथ सम्बन्धों के टूटने व जुड़ने की सच्चाइयाँ प्रकट कर स्वयं की चुप्पी व घर के अशान्त वातावरण को यथार्थमय धरातल पर शब्दबद्ध किया है–''डॉ सिद्धार्थ आते, हमारे बेटी को गोद उठा ले जाते..... मेरी दो दुनिया...दोनों एक दूसरे के विरुद्ध..... वे भी मेरी बच्ची को शुरू से ही इतना लाड़ प्यार करते कि वह उन्हें अंकल नहीं बल्कि पापा कहती।''[17]

डॉ॰ सिद्धार्थ से मैत्रेयी जी ने जाना कि उनके जीवन का महत्त्व क्या है ?मैत्रेयी जी ने डॉ॰ सिद्धार्थ से मिलने वाले प्रेम की सघनता, तरिलमा, परिपूर्णता को अपने जीवन की अनिवार्यता के रूप में रेखांकित किया है–''लोग माने उसे लम्पट, समझते रहे आशिक। मुझे हीन भावनाओं के गले से बाहर खींचने वाला चरित्रहीन कैसे हुआ..... फिर वह परपुरुष कैसे हुआ।''[18] मैत्रेयी जी ने डॉ॰ सिद्धार्थ की दोस्ती का विश्वास, सहयोग का भरोसा, आत्मीयता की उष्मा को अपने ह्रदय में सहेजा, सिद्धार्थ के चले जाने पर मैत्रेयी जी को असहायता व अकेलेपन ने घेर लिया।

45 साल के लम्बे अरसे के बाद जब मैत्रेयी जी ने 'गुड़िया भीतर गुड़िया' आत्मकथा अंश लिखा, उस समय प्रेम का अनवरत इतिहास उनके दृष्टिपटल पर उत्तालित तरंगों के रूप में उछालें मार रहा था। मैत्रेयी जी ने असंमजस की स्थिति में ईमानदारी को पतवार बनाकर किनारे की ओर बढ़ने का साहसिक परिचय दिया है। मैत्रेयी जी ने बुन्देलखण्ड कॉलिज, झांसी में विशिष्ट अतिथि के रूप में लेखकीय प्रेरणा व प्रेम सूत्र का परिचय जब दिया, उसी समय सभागार में उत्सुक उत्तेजना ने मैत्रेयी जी को आह्लादित, उल्लसित व उमंगित किया। मैत्रेयी जी ने अपने समक्ष प्रेमपत्र के पात्र को उपस्थित कर व्यंजित किया है। रचना प्रक्रिया को चरम परिणति तक पहुँचाने की लालसा में 'इन्दन्नमम' उपन्यास 35 साल पुराने पत्र लिखने वाले मित्र को समर्पित किया ताकि उनकी प्रेम कविता सलामत रहे। मैत्रेयी जी ने पत्र के शब्दों को प्रतिध्वनित किया है–''यकीन मानिए यह कविता मेरे साथ ही नहीं, मेरी किताबों के साथ ज़िन्दा रहेगी, हम न रहें तो भी क्या ?'[19]' मैत्रेयी जी ने मित्र के पत्र के जवाव को रेखांकित किया है–''पुष्पा नाम मेरे लिए केवल नाम नहीं था, एक मुकम्मल छवि थी, तुम्हारी छवि.....बहुत अच्छा तुम मुझ तक किताब के रूप में आई।''[20]

आत्मकथा लेखन में स्मृति समुज्ज्वलता का अवलम्बन लेकर 35 वर्ष पुराने मित्र के आकर्षण, आत्मविश्वास, मैत्री आश्वासन, प्रेम के अमरत्व को स्पष्ट करके मैत्रेयी जी ने मिलन के सिलसिले को शब्दबद्ध अभिव्यक्ति दी है–''मैं मिली थी पैंतीस साल बाद बाद आँखो में वही चमक, नजर में आकर्षण की जगह आत्मविश्वास जो मित्रता का आश्वासन, जैसे प्रेम को अमर कर दिया हो। तब से मिलने का एक सिलसिला।''[21]

अभिन्न मित्र मनोहर श्याम जोशी के साथ बिताए क्षणों को मैत्रेयी जी ने वाणीबद्ध किया है–''हम गाड़ीं में पिछली सीट पर बैठे। मुझे दबी आवाज़ में स्पर्श का महत्त्व समझाते रहे और मैं तनाव में डूबी खुद को बचाती रही ..... वैसे भुलाऊँ उस बाजीगर को..... लिखते समय वे आस पास तो क्या। इस लोक में नहीं .....।''[22]

जीवन के कटु सत्यों को अनुभव करते हुए मैत्रेयी पुष्पा जी ने सम व विशम परिस्थितियों में पति के व्यवहार में परिवर्तनशीलता का आभास पाया। इस अभाव को मैत्रेयी जी ने इस प्रकार अभिव्यंजित किया है–''मेरी जान तुम इतनी दुखी। तुमको किसी और ने नहीं मैने सताया

है। मैं तुम्हारा शुभचिन्तक, प्यार करने वाला...भावात्मक लगाव और भावात्मक प्रगाढ़ता के बीच पतली सी लकीर है, जिसका अन्दाज़ा तुम्हें हो न हो मेरे ध्यान से वह लकीर हटती पारस्परिक सौहार्द, यौन तृप्ति, परस्पर सम्मान व नहीं, कुछ ऐसा ही पति कहते हैं।''[23]

अभिन्न मैत्री के संकेत राजेन्द्र यादव जी की तस्वीर मैत्रेयी जी के पति को मानसिक दृष्टि से विचलित कर देती है। दाम्पत्येतर सम्बन्ध की मान्यता है जब पति–पत्नी एक दूसरे पर एकाधिकार स्थापित नहीं कर पाते तब अन्य के आगमन से सम्बन्धों में दरार पड़ जाती हैं। मैत्रेयी जी ने राजेन्द्र यादव जी के तस्वीर की वास्तविकता को अपने पति की वाणी से सुस्पष्ट किया है–''छोटी सी शिकायत मुझसे हुई कि तस्वीर ज़मीन में दे मारी .....इसके साथ ही तस्वीर सवेरे तोड़ी तो शाम तक जड़वा ली। शाम को तोड़ी तो रात तक जड़ कर घर आ गई।..... नए फ्रेम नए स्टाइल देखते ही बनते थे..... बेचारे रेणु जी उसी फ्रेम में रहे, राजेन्द्र यादव बदलते रहे।''[24]

अपने पति द्वारा आरोपित भावात्मक प्रगाढ़ता को साजिश का जामा पहनाकर पति के शब्दों में मैत्रेयी जी ने राजेन्द्र यादव जी के प्रति छटपटाहट का उल्लेख किया है –''कितनी परेशान थी मेरी जान, जब राजेन्द्र यादव हौज ख़ास से घर छोड़कर मयूर विहार गए। इतनी दुखी तो तब भी नहीं थी, जब मै विदेश गया था..... जितना सिद्धार्थ के विदेश जाने पर रोई थी। मेरी पत्नी को दूसरों का विछोह बहुत सालता है।''25

अपने अभिन्न राजेन्द्र यादव जी के 'मयूर विहार ' में बसने से मैत्रेयी जी ने समय की कठोरता को भांप लिया व राजेन्द्र जी के शब्दों को रसमयी आवेश में व्यक्त किया है–''डॉक्टरनी..... राजेन्द्र जी .....चाहता हूँ जिस मकान में जा रहा है उसमें स्त्री के रूप में सबसे पहले तुम्हारा प्रवेश हो।.....मै।.....हाँ, तुम समझो कि मैं भी डॉक्टर साहब की तरह धन धान्य वाला हो जाऊँगा।''[26]

सहित्यिक मित्र राजेन्द्र यादव जी के प्रति अपने पति की उद्विग्नता व 'स्व' की वास्तविकता जानने के निमित्त पति के शब्दों को मैत्रेयी जी ने पाठकों के समक्ष विवेचित किया है –''अभी रात के दस ही तो बजे हैं। चलो उनके नए घर में तुम्हारे प्रवेश की व्यवस्था करें जल्दी से जल्दी उनके संकट कटें।''[27]

पाठकों की जिज्ञासा का शमन करने हेतु मैत्रेयी जी ने राजेन्द्र यादव जी के साथ अपने सम्बन्धों की निश्छलता को शब्दबद्ध किया है तथा पारिवारिक सदस्यों की अपने प्रति अवमानना को भी वाणी दी हैं–''लेकिन ऐसी गद्‌गद् हुई कि आपकी खुशी देखकर खुद ही बाँहे फैलाकर आपसे लिपट गई। भूल गई कि सारा परिवार देख रहा है, नहीं मै कुछ भी नहीं भूली थी, मेरा और आपका निश्छल रिश्ता ही था जिसे किसी पर्दे की ज़रुरत न थी।''[28]

17 वर्षों के साहित्यिक जीवन में मैत्रेयी जी ने विवेकपूर्ण चिन्तन करके साहित्यिक मित्रों का आश्रय पाकर साहित्य में प्राणतत्व को फूँकने का प्रयास किया। जीवन की वास्तविकताओं का पर्यवेक्षण करके भावनाओं के उदात्तीकरण के उपरान्त कटु सत्यों का विस्तारण किया है। भौतिकतावाद के दौर में पति–पत्नी के सम्बन्धों में असन्तोष, अविश्वास, विपरीतधर्मिता आदि घटकों का आकलन होने सम्बन्धी पारिवारिक जीवन की विशृंखलता का मैत्रेयी पुष्पा ने विवेचन किया है तथा जीवन की वास्तविकता का दिग्दर्शन भी किया है। मैत्रेयी जी ने आत्मविश्लेषण करके पारिवारिक अनियमितताओं का शिकार बनने पर भी अपनी लेखकीय शक्ति का प्रदर्शन किया है। आत्मकथा के सन्दर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान अविस्मरणीय है जिन्होंने यथार्थधर्मिता के धरातल पर जीवन में प्रेम की अपरिहार्यता को प्रकट करके अपनी विचारधारा को पाठकों के समक्ष सम्प्रेषित किया है। रचनात्मकता में अनुभवों का पुट देकर अपने जीवन को सार्वजनिक बनाने वाली चित्रमयी शैली का समर्थन किया है। मैत्रेयी जी ने अपनी आत्मकथा में भुक्त यथार्थ की अभिव्यंजना, भावनाओं का सहज उच्छ्लन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वका शमन, आत्मरहस्योद्‌घाटन आदि प्रयोजनों के निहित्तार्थ को सुस्पष्ट किया है।

1. विस्काउण्ट स्नोडनः आटोबॉयग्राफी, आइवर निकोलसन एंड वाटसन, लन्दन, 1934 (books.google.co.in)
2 डिक्शनरी आफ वर्ल्ड लिटरेरी टर्म्स, फोरम्स, टैक्नीकस एंड क्रिटीसीज़्म, जे॰ टी॰ शिप्ले (www.librarythings.com)
3. विनीता अग्रवालः हिन्दी आत्मकथाएँः सिद्धान्त एवं स्वरूप विश्लेषण, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989
4. विश्व बन्धु 'व्यथित': हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1989
5 नारायण विष्णु शर्माः हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978
6.नीरूः प्रतिरोध का दस्तावेज़ः महिला आत्मकथाएँ, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7कमलेश सिंहः हिन्दी आत्मकथाः स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989
8 उर्मिला भटनागरः हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य चित्रण, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली, 1981
9 मैत्रेयी पुष्पाः कस्तूरी कुंडल बसै, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ0 40।
10 वही, पृ .41
11 वही, .पृ.128
12 वही, पृ.129
13 वही, पृ.129
14 वही, पृ.129
15 मैत्रेयी पुष्पाः गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ0 8
16 वही, पृ.16
17 वही, पृ.17
18 वही, पृ.17
19 वही, पृ.151
20 वही, पृ.151
21 वही, पृ. 129

22 वही, पृ.228–229
23वही, पृ.295–96
24 वही, पृ.292
25 वही, पृ. 297
26 वही, पृ. 304
27 वही, पृ.305
28 वही, पृ. 311

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net